K. Nand M.A III Sem
25/10/2021

के उत्पन्न गलत विश्वास को दैत्यात्मक व्यामोह की संज्ञा दी जाती है।

मनोविदालिता की संज्ञानात्मक व्याख्या में जैविक परिणामों को भी सम्मिलित किया गया है। संज्ञानात्मक सिद्धान्त के अनुसार व्यक्ति में पहले जैविक समस्याएँ उत्पन्न होती हैं जिनसे रोगी में अनोखी संवेदी अनुभूतियाँ होती हैं। फलतः रोगी को विचित्र आवाज, दृष्टि एवं अन्य संवेदना आदि का अनुभव होने लगता है।

(C) सामाजिक- सांस्कृतिक विचारधारा (Socio-cultural View) —

सामाजिक - सांस्कृतिक विचारधारा से प्रेरित मनोविज्ञानियों के मतानुसार मनोविदालिता मूलतः समाज की ही देन है। इनका मत है कि सामाजिक प्रत्याशा एवं मानक के विभिन्नता के अनुसार यह रोग एक समाज से दूसरे समाज तक परिवर्तित होता रहता है। ~~प्रत्येक~~

प्रत्येक समाज व्यक्ति के व्यवहार में उत्पन्न अनोखापन को भिन्न-भिन्न ढंग से परिभाषित करता है और मनोविदालिता के रोगियों से विभिन्न तरह की भूमिकाओं की उम्मीद करता है।

एक अध्ययन में पाया गया कि मनोविदालिता की उत्पत्ति पर सामाजिक वर्ग का भी प्रभाव पड़ता है। इसमें पाया गया कि निम्न सामाजिक वर्ग में मनोविदालिता के उत्पन्न होने की संभावना उच्च सामाजिक वर्ग से अधिक होता है। यह संबंध बड़े शहरों में स्पष्टता से पाया गया परन्तु छोटे शहरों में इसकी अस्पष्टता अधिक नहीं पाई गई। कुलाके द्वारा किए गए एक अध्ययन में पाया गया कि पेशा का भी प्रभाव मनोविदालिता की उत्पत्ति पर पड़ता है। निम्न स्तर के पेशाओं में मनोविदालिता का दर उच्च क्रम होता है। ~~इस~~ इन अध्ययनों से स्पष्ट

X. Nand M.A III Sem
25/10/2021

होता है कि मनोविदालिता की उत्पत्ति या विकास पर सामाजिक एवं सांस्कृतिक कारकों का भी प्रभाव पड़ता है।

मनोविदालिता की उत्पत्ति एवं विकास के कारकों की व्याख्या मुख्यतः तीन भागों — जैविक विचारधारा, मनोवैज्ञानिक विचारधारा एवं सामाजिक एवं सांस्कृतिक विचारधारा के आधार पर की गई है। इनमें जैविक विचारधारा तथा मनोवैज्ञानिक विचारधारा को तुलनात्मक रूप से अधिक महत्वपूर्ण बतलाया गया है। मनोवैज्ञानिक विचारधारा में पारिवारिक सिद्धान्त को सर्वाधिक महत्वपूर्ण बतलाया गया है।

The End